IJAER/Sep-Oct 2016/Volume-5/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जनप्रिय कवि के रूप में त्रिलोचन का भारतीय हिन्दी साहित्य में स्थान

डॉ० शिवानी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग ए0के0पी0 कॉलेज, खुर्जा, बुलन्दशहर

सारांश : हर युग में रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज और रचनाओं को नई दिशा देने की भरपूर कोशिश की कई रचनाकारों व आचार्यो ने नदियों के किनारे की तरह निर्मल अविरल धारा की तरह शांत निर्मल अमर जीवनदायिनी रचनाओं का बोध किया। ऐसी ही सोच विचारधार के कवि त्रिलोचन शास्त्री जी हैं जिन्होने आधुनिक काल में प्रगतिशील चेतना को नई चकाचौध, कृत्रिमता से बिल्कुल अलग हटकर उसे एक अलग पहचान दी। कविताओं की पुष्टि के लिए उन्होने उसे ठोंक पीटकर इस कदर पकाया कि असलियत बयां करने में कोई शंका ना रह गई। हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील चेतना का विकास कोई सोची समझी रणनीति के तहत नही हुआ वरन् एक आवश्यकता की पूर्ति के लिए हुआ प्रगतिशील चेतना का मुख्य उदेदश्य देशवासियों, पाठकों, श्रोताओं में राष्ट्रनुराग पैदा करने आर्धिक व समाजिक विषमता दूर करने गरीबों व किसानों का शोषण बन्द कराने के उद्देश्य से हुआ।

त्रिलोचन जनवादी विचारधारा के उन कवियों में से हैं, जिनके ह्रदय में जहाँ एक ओर शोषितों के प्रति गहरी सहानुभूति देखने को मिलती है, वहीं दूसरी ओर शोषक वर्ग के प्रति तीव्र विरोध का स्वर सुनाई देता है। अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर ये किसान, मजदूर के श्माउथ पीसश नजर आते हैं, वहीं दूसरी ओर नेतावर्ग, पूंजीपति वर्ग, जो देश को दोनों हाथों से लूट रहे हैं, विरोध देखने को मिलता है। ये मानवता के पक्षधर हैं। यही कारण है कि समष्टि कल्याण का भाव इनकी रचनाओं में निहित हैं।

प्रस्तावनाः

त्रिलोचन शास्त्री हिंदी साहित्य में प्रगतिशील जनवादी विचारधारा के कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। "त्रिलोचन घटनाओं के कवि नहीं हैं। वे मूल्यों के कवि हैं।''

त्रिलोचन जितने मानव –सघर्ष के कवि है उतने ही प्रकृति की लीला और सौन्दर्य के भी इसलिए प्रकृति बहुत गहराई तक उनकी कविताओं में रची –बसी है। प्रकृति के बारे में त्रिलोचन का दृष्टिकोण बहुत कुछ उस ठेठ भारतीय किसान के दुष्टिकोण जैसा है जो कठिन श्रम के बीच में भी उगते हुए पौधो की हरियाली को देखकर रोमांचित होता है। निराला की तरह त्रिलोचन जी ने भी पावस के अनेक चित्र अंकित किये है और बादलों के कठोर संगीत को अपनी अने कविताओं में पकडने की कोशिश की है। परन्तु ऐसा

करते हूए वे किसी विलक्षण सौन्दर्य लोक का निर्माण नही करते बल्कि अपनी चेतना के किसी कोने में दबे हुए किसान की रचना भूमि का कोई ध्रुवीय संघर्ष नही है सामान्य जीवन के साधारण से लगते प्रसंग और उनके असाधारण बेधते प्रभाव यह उनके रचना संसार का दो टूक सच है। यह सत्य प्रवीति और प्रबोध की अंदरूनी बनावट से पैदा होता है जिसके लिए यथार्थ न तो सिर्फ एक कालावधि का प्रसंग है और न ही कल्पना कोई प्रगतिशील काव्य धारा के सशक्त रचनाकारों मं त्रिलोचन एक ऐसा सुपरिचित नाम है जिसकी रचनाओं में सहजानुभूति का खुला चित्रण है। कवि त्रिलोचन प्रगतिवादी रचनाकार होने के कारण सदैव विकासोन्नमुख रहे है। ये परम्परा के नही नवीनता के पोषक होने के नाते आधुनिकता में निरन्तरता की पहचान प्रस्तुत करने वाले अदभुत कवि है। त्रिलोचन रचनात्मक लेखन कार्य के साथ साथ कोश संपादन और पत्रिकरिता से भी जुडे रहे है। हॅस और कहानी जैसे उच्चस्तरीय और चित्रलेख में आप ने सह संपादक के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त कुछ वर्षो तक दिल्ली विश्वविद्यालय के द्वारा निर्माणधीन उर्दू हिन्दी कोष का संपादन कार्य भी किया। त्रिलोचन जी के शब्दो में –

शब्दो से कम नही चलता
जीवन को देखा है।
यहॉ कुछ और
इसी तरह यहॉ वहॉ
हरदम कुछ और
कोई एक ढंग सा काम नही करता

इनका जीवन कष्टों और संघर्षों का जीवन है। इनकी अनेक कविताओं में हमें उस संघर्ष के दर्शन होते हैं। अपनी दिगंत में संकलित स्पष्टीकरण में कवि कहते है–

"मित्रों, मैंने साथ तुम्हारा जब छोड़ा था

तब मैं हारा थका नहीं था, लेकिन मेरा तन भूखा था मन भूखा था तुमने टेरा

उत्तर मैंने दिया नहीं तुमको, घोड़ा था

तेज तुम्हारा, तुम्हें ले उड़ा! मैं पैदल था।"

त्रिलोचन ने अपने जीवन में यथार्थ को जिया और भोगा है। इननी रचनाओं में भी इस यथार्थ की स्पष्ट अभिव्यक्ति दिखाई देती है । कवि लिखते हैं–

जीवन देखा, धूल और मिट्टी से आया

था, रक्त के कणों में यह संबंध समाया

था, कुछ ऐसा कि नदी की भी कल कल छल छल

मैं समाज में सुनता था, जिसका था खाना

बिना झिझक बेलाग मुझे उसका था गाना।"

इनके रचनात्मक व्यक्तित्व में एक विचित्र विरोधामा भी दिखाई देता है एक ओर यदि उनके यहॉ गॉव की धरती का –सा उबड खाबडपन दिखाई पडेगा तो दूसरी ओर कला की दृष्टि से एक अदभुत वलासिकी कसाव व अनुशासन थी। त्रिलोचन की सादगी की कविताओं को ध्यान से देखा जाए तो उनकी तह में अनुभव की कई परते खुलती दिखाई पड़ेगी। इनके यहॉ आत्मपरक कविताओं की संख्या बहुत अधिक है। अपने बारे में शायद ही किसी कवि ने इतने रगों में और इतनी कविताए लिखी है। कई बार संस्कृत के कठिन और लगभग प्रवाहच्युत शब्द भी उतनी ही सहजता से कविता में प्रवेश करते है और चुपचाप अपनी जगह बना लेते है। त्रिलोचन को हिन्दी में सॉनेट (अंग्रेजी छंद या लघु कविता) को स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। सॉनेट के अतिरिक्त उन्होने गीत बरवै गजल, कुंडलियॉ भी लिखी वह आधुनिक हिन्दी कविता में सॉनेट के जन्मदाता की रचना की। इन्होने रोला छंद को आधार बनाया और बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए चतुष्पदी को लोकरंग में रंगने का काम किया। शब्दों के सामर्थ्य पर अटल विश्वास रखने वाले कवि त्रिलोचन अपनी कविता से स्वंय क्या अपेक्षा करते है यह भी ध्यातव्य है। आज जब सामान्य नागरिक और सहज पाठक की रूचि समकालीन कविता कोई तालमोल नही बैठा पा रही तब त्रिलोचन जैसा कवि अपने काव्य सृजन के प्रति किस तरह सजग है यह देखने लायक है त्रिलोचन का स्वय चित्र देखिए –

वही त्रिलोचन है वह जिसके तन पर गंदे कपड़े है। कपड़े भी कैसे फटे लटे हैं कौन कह सकेगा इसका यह जीवन चन्दे पर अवंलबित है। चलना तो देखों इसका उठा हुआ सिर चौडी छाती , लम्बे बॉहे सधे कदम तेज वे टेढी मेढी राहे मानो डर से सिकुड रही है। किसका –किसका ध्यान इस समय खीच रहा है। त्रिलोचन जानते है कि दुख के तम में जीवन ज्योति जला करती है।

त्रिलोचन के शब्दो में –

क्यों मैंने पाया है इतना नरम कलेजा

जो दुख कभी किसी का नही देख सकता है

ऑखे भर भर जाती है मन थकता। ‘‘

आधुनिक हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर जनपद के समर्थक , शब्द साधक लोक सौन्दर्य और सॉनेट के कर्ता त्रिलोचन अपने जीते जी ही किवदति पुरूष बन गये थे। त्रिलोचन के 17 कविता संग्रह प्रकाशित हुए इनमं से गजल मुक्तक छंद गीत कुंडलियॉ एवं गद्य कविताएं है। लेकिन सबसे ज्यादा ख्याति सॉनेट से मिली। जीवन मे संघर्ष के बल पर ही त्रिलोचन आगे बढ़े। उन्होने कहा है कि जीवन उसका जो कुछ है पथ पर बिखरा है तप तपकर ही भटटी में सोना निखरा है।

त्रिलोचन शोषक वर्ग के तीव्र विरोधी हैं। उनका मानना है कि शोषक वर्ग के खात्मे के बिना समाज का और देश का कल्याण नहीं हो सकता। वे लिखते हैं कि जिस दिन शोषित वर्ग एकजुट होकर इस वर्ग के विरुद्ध क्रांति का विगुल फूकेंगे, उस दिन इस वर्ग को समान अधिकार प्राप्त होगा।

कठफोड़े ने मार–मार कर उन कीड़ों को

बाहर आज निकाल लिया आहार के लिए

जो तरु के अंतस्थ शत्रु थे।

त्रिलोचन लोकहित के सबसे बड़े कवि थे, कविता –कम इनके लिए तप बराबर था जिसके लिए ये किसी भी जोखिम को उठाकर कर्म करने में तत्पर थे। उनकी साधारण लगने वाली कविताएँ भी पाठक पर गहरी छाप छोडती है। लोकसंस्कारी स्वभाव के कारण उनकी कविताओं में स्वतः लक्षित होता है। वे गॉव के कृषक संस्कार के काफी करीब थे जो उन्हें चिरानी पटटी गांव और काशी में मिला था। उनके गांव से उन्हें लोक की समझ मिली, काशी से काव्य –चिंतन की। उनका लोक जिन तत्वों को आलेखित करता है उसमें बडी –बडी बातों के लिए जगह नही बात को सीधे –सीधे कह देने में विश्वास रखते है। कहने का अर्थ है कि वे हदय से लिखते थे बल्कि यू कहें कि रचना को अपना हदय देते थे। अभिव्यक्ति की इस कला में उनकी भाषिक संरचना का भी कम योग नही है। भाषा के प्रति त्रिलोचन आरम्भ से ही सजग और जागरूक रहे। त्रिलोचन जी की भाषा सहज सरल अनूठी और ठेठ देशज जातीय रूप से ओत–प्रोत है। हिन्दी काव्य जगत में लोकधर्मिता और प्रगतिशील आधुनिकता का निर्वहन त्रिलोचन के अलावा कई अन्य कवियों में भी बखूबी किया जैसे नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि। त्रिलोचन की लोकधर्मिकता आधुनिकता के दायरे में रखना ज्यादा बेहतर जान पड़ता है। यहॉ जीवन से गहरा लगाव जन के साथ तादात्म्यता और संघर्ष में तपकर निखरते जीवन के प्रति विराट निष्ठाबोध ही सच्चे अर्थो में त्रिलोचन को आधुनिक बनाती है।

कवि त्रिलोचन मानते है कि –

''उस जनपद का कवि हूं जो भूखा दूखा है,
नंगा है अनजान है, कला नही जानता,
कैसी होती है क्या है वह नही मानता,
उसके जीवन का सोता इतिहास ही बता
सकता है। वह उदासीन बिल्कुलअपने से ,
अपने समाज से है।

त्रिलोचन की कविताओं में एक आकर्षण ओर है उनकी कविताओं में बडी ज्यादा मात्रा में लोकचित्र और प्रकृति का समायोजन किया गया। वेअपने आस –पास की प्रकृतिको ही सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करते और अपने शब्दो में उतार देते ऐसी प्रतिभा के कवि त्रिलोचन थे।

''हिन्दी की कविता उनकी कविता है जिन की
सासों को आराम नही था और जिन्होनें
सारा जीवन लगा दिया कल्मष को धोने में
समाज के नही काम करने में घिन की
किसी किसी दिन हिन्दी में सतरंगी आभा
विभव भूति की नही मिलेगी जनजीवन के
चित्र मिलेगें घर के वन के सब के मन के
भाव मिलेंगे बोय हुए खेत में डाभा। ''

त्रिलोचन मानव के थोथे अहंकार के तीव्र विरोधी हैं। उनका मानना है कि यदि एक वर्ग साधन–संपन्न है, तो उसे अहंकार–मुक्त होना चाहिए। उनका कहना है कि जब तक वे इस विषमता को समाज से उखाड़ नहीं फेकेंगे, तब तक उन्हें चौन नहीं आएगा। वे लिखते हैं–

अहंकार जो थोथा

है वह मुझको सह्य नहीं है, मानव असली मुझको प्रिय है– खड़ा खेत में है जो थोथा मैं उसको उखाड़ डालूंगा–ज्वर है फसली विषम समाज व्यवस्था सम जब खिलाएगा तभी, तभी संतोष इस हृदय में आएगा।

त्रिलोचन ने राजनीतिक विषयों पर अनेक कविताएं लिखी हैं। ये मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित रहे हैं। यही कारण है कि इनकी कविताओं में व्यवस्था – परिवर्तन के लिए क्रांति का आह्वान देखने को मिलता है। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह इनके संबंध में कहते हैं कि दरअसल अच्छी राजनीतिक कविता बहुत कठिन कला है, क्योंकि राजनीतिक काव्य रचना के स्पष्ट खतरे हैं। एक खतरा तो क्लीशे और जर्णन का ही है। इसलिए राजनीतिक भाषा के विरोध या विडंबनापूर्ण प्रयोग द्वारा ही अच्छी राजनीतिक कविता की रचना संभव है। इसके अलावा तो वही रास्ता बचा रहता है जो त्रिलोचन ने अपनाया। रोजमर्रा की राजनीति पर टिप्पणी करने के बजाए जीवन में गहरे पैठी हुई राजनीति का आलोचनात्मक अंकन स्वाधीनता के बाद देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की अपरिपक्व नीतियों का त्रिलोचन ने खुलकर विरोध किया है। कवि का मानना है कि नेहरू की नीतियों के कारण ही देश को महंगाई, बेरोजगारी, भुखमरी आदि का सामना करना पड़ रहा है। कवि लिखते हैं–

षनिरहू ने भाई, जब से घरबार संभाला

तब से सब कुछ बदल गया है। उन्हें लड़ाई

अच्छी लगती नहीं, शांति का गरम मसाला

बाँट रहे हैं मुफ्त सभी को।

त्रिलोचन इस सड़ी हुई व्यवस्था के प्रति भी आक्रोशित हैं। उनका मानना है कि नेता देश को लूट रहे हैं और जनता मूक दर्शक बनकर देख रही है। यही कारण है कि कवि जनता को एकजुट होकर क्रांति करने के लिए प्रेरित करते हैं। कवि कहते हैं–

"सड़ी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिए

मैं ललकार रहा हूँ उस सोई जनता को,

जिसको नेता लूट रहे हैं।

इस संसार में ऐसे बहुत से प्राणी हैं जो मानवता की बातें करते हैं, परोपकार का राग अलापते हैं लेकिन उनकी कथनी और करनी में हमें बहुत बड़ा फर्क देखने को मिलता है । कवि का ऐसा मानना है कि मानव का कल्याण सिर्फ बड़ी–बड़ी बातें करने से नहीं होगा बल्कि यथार्थ की भावभूमि में उतरकर

उसका भला करना होगा। तभी मानवता का उद्देश्य सफल होगा। मानव को मानव मानना मानवता की पहली सर्त है–

मानवता की बातें करते हो

रूढ़िवादी भावनाएं समाज और देश के उत्थान में बाधक होती हैं। जब तक मनुष्य इन रूढ़िवादी विचारधाराओं का त्याग नहीं करेंगे, तब तक सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों का अंत नहीं होगा। आवश्यकता है मनुष्यों के विचारों में परिवर्तन की । यही कारण है कि कवि कहते हैं–

ये नए युग से अपरिचित और सशंकित

ये गए सब दिन सताए

चल रहे प्राचीनता से लौ लगाए

एक अपनी ही नई दुनिया बसाए

आज भी इनको पुरानी बात पहले रूप में ही

भा रही है भा रही है भा रही है।

निष्कर्ष

त्रिलोचन की रचनाओं में सपाट बयानबाजी के दर्शन होते हैं। ये बातों को गोल–गोल घुमाने के पक्ष में नहीं हैं। ये जो कहते हैं, उसमें यथार्थ है। इनका मानना है–

ष्कोई भूखा हो तो उसको ला कर रोटी

दो, मत लंबी चौड़ी बात बनाओ इसकी उसकी।

त्रिलोचन को साहित्य का हनुमान कहा जाता है। इनकी उन्नत सृजनशीलता इन्हें ये उपाधि प्रदान करती है। बेबाक शैली, फक्कड़ाना स्वभाव और समाज के दबे कुचले लोगों के प्रति इनकी संवेदना निश्चय ही इन्हें महान बनाती है । यही कारण है कि सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा कहते हैं–

"त्रिलोचन जिस खास अर्थ में आधुनिक हैं, वह यही गरीबी से उनकी कविता का नाता है। नयी कविता ने अपने लिए जो परिधि बनाई, उसने जनता के दुख दर्द को उससे बाहर रखा । त्रिलोचन की कविता इस परिधि को तोड़ती है।कृ

त्रिलोचन जी की कविता में भाषा शैली बिम्ब प्रतीक अंलकार छन्द सभी उनकी सवेदना से निर्मित भाव भूमि से जुडकर प्रस्तुत हुए है। उनकी कविता में थोड़ा सा भी काल्पनिक और कृत्रिमता प्रतीत नही होती। कवि यथार्थ की भूमि पर खडे होकर वास्तविक परिस्थितियों तथा अनुभूतियों का चित्रण करते है। त्रिलोचन ने आधुनिक कवियों में अपनी अलग पहचान बनाई है। उनकी कविता आधुनिक कविता के प्रचलित प्रतिमानों से अलग आलोचक से एक नये प्रकार के मुक्त और सीधे संबध की मॉग करती है। त्रिलोचन का व्यक्तित्व हिन्दी काव्य नभोमण्डल मे प्रभयुक्त होकर उर्ध्वाधर चमक रहा है। लोक जीवन की ऐसी स्वच्छ और जीवन तस्वीर हिन्दी जगत में प्रायः दुर्लभ है। वे अकृत्रिम सौन्दर्य और मानवीय गरिमा के कवि है। उनकी कविता हमारे जीवन संग्राम की कविता है। छोटे –छोटे विषय छोटे छोटे दुख उनकी कविताओं में बिंधे हुएह मिलेगे। जाहिर है कि इनकी कविता भारत की रोजमर्रा जिंदगी की कविता है। जिसमें आम जनजीवन की दुख दैन्य और पीड़ाएँ है। इनकी कविता में हिन्दी और उसकी अन्य बोलियों का अपार धैर्य है। त्रिलोचन के शब्दो का जादू पाठक को अपनी ओर खिचता है। शब्दो की गहराई और सादगी पाठक को मनभावक लगती है। वे आधुनिकता के पक्षधर है। उनकी प्रयोग की डगर सत्य की खोज है जनसे काव्य जगत को नई दिशा का ज्ञान होता है। नए कवियों को प्रेरणा मिलती है और काव्य नएपन के साथ जीवित भी रहता है। इसी कारण त्रिलोचन उस समुद्व की तरह हैं जिसमें शब्दो का भण्डार कभी खत्म नही होता। इनकी ज्ञान की गंगा रूपी शब्दकोष सराहनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिलोचन के बारे में, संपादक– गोविंद प्रसाद, मैनेजर पांडेय का लेख पृ. 157
2. दिगंत, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 17
3. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 85
4. दिगंत, त्रिलोचन शास्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 15
5. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 93
6. त्रिलोचन के बारे में, संपादक– गोविंद प्रसाद, पृ. 88
7. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 76

8. अनकही भी कुछ कहनी है, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 87
9. तुम्हें सोचता हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 83
10. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 96
11. धरती, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 27
12. फूल नाम है एक, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 71
13. धरती, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 25
14. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 87
15. त्रिलोचन के बारे में, रामविलास शर्मा का लेख, त्रिलोचनः आधुनिक और परंपरा बोध, पृ. 55.